एक्स–सीटू

अपडेट

समाचार पत्र
केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण

विशेष अंक
२०२३

विषय सूची

सदस्य सचिव की कलम से	1
केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण के बारे में	2
मान्यता प्राप्त चिड़ियाघरों की सूची :	3
समाचार एवं घटनाक्रम	11
चिड़ियाघर के बारे में	
भगवान बिरसा बायोलॉजिकल पार्क, रांची, झारखण्ड	15
लॉयन ब्रीडिंग सेंटर एण्ड मल्टीपल सफारी पार्क, इटावा	18
गांधी प्राणी उद्यान ग्वालियर मध्य प्रदेश	20
नाहरगढ़ बायोलॉजिकल पार्क जयपुर	21
चिड़ियाघर में आकर्षण	
भगवान बिरसा बायोलॉजिकल पार्क, रांची, झारखण्ड	23
चिड़ियाघर का उमदा प्रयास	
लॉयन ब्रीडिंग सेंटर एण्ड मल्टीपल सफारी पार्क, इटावा की ऐतिहासिक उपलब्धि	25

प्रथम पृष्ठ की छायाचित्र का श्रेय :
डा. संजय कुमार शुक्ला, (भा.व.से.)
श्री शशांक पटेल

सम्पादक मण्डल

मुख्य सम्पादक
डा. संजय कुमार शुक्ला, भा.व.से.

सम्पादकीय टीम
सुश्री आकांक्षा महाजन, भा.व.से.
डा. देवेन्द्र कुमार
डा. नताशा एस. वशिष्ठ

डिजायन
श्री शशांक पटेल

सदस्य सचिव की कलम से

केंद्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण (सीजेडए) भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय का एक सांविधिक निकाय है और इसका गठन 1992 में किया गया था। सीजेडए का मुख्य उद्देश्य भारतीय चिड़ियाघरों को स्थापित कड़ियों के साथ अत्याधुनिक एक्स–सीटू सुविधाओं के रूप में तैयार करना है। इन–सीटू संरक्षण के लिए सीजेडए की परिकल्पना जागरूकता को बढ़ावा देने और वन्यजीवों के संरक्षण को आगे बढ़ाने के लिए चिड़ियाघरों को आवश्यक क्षमता के साथ सशक्त बनाने की भी है। वर्ष 2023 के लिए सीजेडए न्यूजलैटर के इस विशेष अंक में केंद्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण के दृष्टिकोण, मिशन, उद्देश्य और कार्यों के बारे में एक सिंहावलोकन प्रदर्शित किया गया है।

केंद्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण के सौंपे गए कार्यों में से एक चिड़ियाघर कर्मियों के प्रशिक्षण का समन्वय करना है। तदनुसार, केंद्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण प्रत्येक स्तर के चिड़ियाघर प्रबंधक और कर्मचारियों के कौशल को निखारने और ज्ञान बढ़ाने के लिए समय–समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है।

चिड़ियाघरों के बारे में जानकारी के अन्तर्गत भगवान बिरसा जैविक उद्यान, रांची, झारखंड, गांधी प्राणी उद्यान, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, बब्बर शेर प्रजनन केंद्र और मल्टीपल सफारी पार्क, इटावा, उत्तर प्रदेश और नाहरगढ़ जैविक पार्क, जयपुर, राजस्थान को ''चिड़ियाघर इन फोकस'' खंड के तहत शामिल किया गया है।

मुझे विश्वास है कि भारतीय चिड़ियाघरों के सामूहिक और एकीकृत प्रयास वन्यजीव संरक्षण, शिक्षा और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी की गहरी भावना पैदा करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करेंगे।

शुभकामनाओं के साथ, मैं देश के चिड़ियाघरों द्वारा किए जा रहे नवाचार एवं विशेष प्रयासों के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए केंद्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण का समाचार–पत्र ''एक्स–सीटू अपडेट 2023 का विशेष अंक प्रस्तुत करता हूं।

डॉ. संजय कुमार शुक्ला
सदस्य सचिव
केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण

केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण के बारे में

भारतीय वन्यजीव मंडल ने देश में चिड़ियाघरों की स्थापना एवं रख–रखाव के लिए विस्तृत अध्ययन करने हेतु 18 नवंबर, 1972 को नई दिल्ली में आयोजित अपने नौवें सत्र में 'चिड़ियाघर संबंधी विशेषज्ञ समूह' के रूप में अपने चिड़ियाघर खण्ड का पुनर्गठन किया। चिड़ियाघर संबंधी विशेषज्ञ समूह ने अपना प्रतिवेदन जून, 1973 में प्रस्तुत किया जिसे मंडल द्वारा नवंबर, 1973 की बैठक में स्वीकार किया गया था। प्रतिवेदन में एक केंद्रीय अभिकरण (चिड़ियाघर अनुदान आयोग) स्थापित करने की अनुशंसा की गई, और इस अनुशंसा को लागू करने हेतु, वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 को वर्ष 1991 में एक संशोधन अधिनियम द्वारा संशोधित किया गया था। भारत में केंद्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण की स्थापना हेतु वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 में एक पृथक अध्याय, धारा 38ए–38जे युक्त अध्याय–4 का समायोजन किया गया था। तद्नुसार, केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण की स्थापना पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के अंतर्गत एक सांविधिक निकाय के रूप में भारत सरकार द्वारा वर्ष 1992 में भारत में चिड़ियाघरों के कामकाज की निगरानी करने और उन्हें चिड़ियाघर में वन्यजीवों की देखभाल के मौजूदा मानकों को बढ़ाने के अलावा तकनीकी सहायता प्रदान करने हेतु की गई।

दृष्टि

चिड़ियाघर में पारिस्थितिक तंत्र आधारित प्राकृतिक बाड़ों में स्वस्थ वन्यजीव होंगे, जो सक्षम एवं अनुभवी कर्मचारी, अच्छे शिक्षण एवं व्याख्यात्मक सुविधाओं, लोगों के समर्थन एवं स्व–दक्षता के साथ इन–सीटू एवं एक्स–सीटू संरक्षण में सहायक होंगे।

लक्ष्य

केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण का लक्ष्य भारत में चिड़ियाघरों में रखे गए वन्यजीवों को बेहतर देखभाल एवं पशु–चिकित्सा देखभाल प्रदान करना और लोगों के बीच प्रबंधन, शिक्षा और जागरूकता पैदा करने की सर्वोत्तम प्रथाओं के माध्यम से उनका संरक्षण सुनिश्चित करना है।

उद्देश्य

1. भारतीय चिड़ियाघरों में वन्यजीवों के रख–रखाव और स्वास्थ्य देखभाल हेतु न्यूनतम मानकों और मानदण्डों को लागू करना आ
2. तेजी से बढ़ते अनियोजित एवं बदहाल चिड़ियाघरों को नियंत्रित करना।

कार्य

भारत में चिड़ियाघरों को वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के प्रावधानों के अधीन विनियमित किया जाता है और राष्ट्रीय चिड़ियाघर नीति, 1998 द्वारा निर्देशित किया जाता है। भारत सरकार ने चिड़ियाघर मान्यता नियम, 1992 बनाया। केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण की सिफारिश पर इसे चिड़ियाघर मान्यता नियम, 2009 के रूप में संशोधित किया गया था। ये नियम देश में चिड़ियाघरों के प्रबंधन के लिए मानक एवं मानदंड निर्धारित करते हैं। केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण देश में चिड़ियाघरों के कामकाज की निगरानी करता है तथा उनमें सुधार लाने हेतु तकनीकी एवं अन्य सहायता प्रदान करता है।

वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की धारा 38सी के तहत प्राधिकरण को सौंपे गए कार्य निम्नलिखित हैं:–

- चिड़ियाघरों में रखे गए वन्यजीवों के आवास, रख–रखाव एवं चिकित्सा देख–भाल के लिए न्यूनतम मानकों को निर्दिष्ट करना।
- निर्धारित मानकों एवं मानदंडों के अनुसार चिड़ियाघरों के कामकाज का मूल्याँकन एवं निर्धारण करना।
- चिड़ियाघरों को मान्यता देना या उनकी मान्यता रद्द करना।
- विलुप्त हो रही वन्यजीवों की प्रजातियों के कैप्टिव प्रजनन हेतु उनकी पहचान करना तथा इस संबंध में चिड़ियाघर को जिम्मेदारी सौपना।
- प्रजनन के उद्देश्य से वन्यजीवों का अधिग्रहण, विनिमय एवं उधार देने में समन्वय स्थापित करना।
- कैप्टिविटी में प्रजनित वन्यजीवों की विलुप्त प्रजातियों की वंशावली पुस्तक (स्टडबुक) का रख–रखाव सुनिश्चित करना।
- चिड़ियाघरों में कैप्टिव वन्यजीवों के प्रदर्शन के संबंध में प्राथमिकताओं एवं मुद्दों की पहचान करना।
- भारत और भारत के बाहर चिड़ियाघर कर्मियों के प्रशिक्षण का समन्वय करना।
- चिड़ियाघरों के प्रयोजनों के लिए कैप्टिव प्रजनन एवं शैक्षणिक कार्यक्रमों में अनुसंधान समन्वय करना।
- चिड़ियाघरों को वैज्ञानिक आधार पर उनके समुचित प्रबंधन और विकास के लिए तकनीकी एवं अन्य सहायता प्रदान करना।
- ऐसे अन्य कार्य करना जो चिड़ियाघरों के संबंध में इस अधिनियम के उद्देश्यों को पूरा करने हेतु आवश्यक हो।

मान्यता प्राप्त चिड़ियाघरों की सूची (31 मार्च 2023)

भारत में चिड़ियाघरों को संचालन के लिए वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की धारा 38एच(1) के प्रावधानों के तहत केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण की मान्यता की आवश्यकता होती है। देश में कोई भी चिड़ियाघर केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण की पूर्व अनुमति के बिना स्थापित एवं मान्यता के बिना संचालित नहीं किया जा सकता है।

देश में चिड़ियाघरों के वैज्ञानिक प्रबंधन और संचालन के लिए एवं भौतिक और मानव बुनियादी ढाँचे को नियमित करने के उद्देश्य से, भारत सरकार ने चिड़ियाघर मान्यता नियम, 2009 के तहत मानक और मानदंड निर्धारित किए हैं। तद्नुसार, भारत में चिड़ियाघरों को चिड़ियाघर मान्यता नियम, 2009 के नियम 9 के तहत बड़े, मध्यम, छोटे एवं लघु श्रेणी के चिड़ियाघरों के रूप में वर्गीकृत किया गया है। चिड़ियाघरों का यह वर्गीकरण चिड़ियाघरों के प्रबंधन और वन्यजीवों के आवास, रखरखाव, पशु–चिकित्सा देखभाल आदि से संबंधित मानकों और मानदडों को लागू करने के उद्देश्य से किया गया है। चिड़ियाघर मान्यता नियम, 2009 का नियम 9, चिड़ियाघरों के वर्गीकरण के लिए मानदंड (चिड़ियाघर का क्षेत्रफल, आगंतुकों की संख्या, प्रजातियों एवं वन्यजीवों की संख्या और लुप्तप्राय प्रजातियों के वन्यजीवों की संख्या) निर्धारित करता है। उपरोक्त चार श्रेणियों में से किसी एक में वर्गीकृत होने के लिए चिड़ियाघर को उपरोक्त मानदंडों में से कम से कम चार मानदंडों (प्रजातियों की कुल संख्या, लुप्तप्राय प्रजातियों की कुल संख्या और उनके द्वारा रखे गए लुप्तप्राय प्रजातियों सहित वन्यजीवों की कुल संख्या) को पूरा करना चाहिए।

31.03.2023 तक, देश में वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की धारा 38एच(1) के तहत मान्यता प्राप्त 155 चिड़ियाघर हैं। जिसमें 17 बड़े चिड़ियाघर, 23 मध्यम चिड़ियाघर, 34 छोटे चिड़ियाघर एवं 62 लघु चिड़ियाघर एवं 19 रेस्क्यू सेंटर हैं। देश में 155 मान्यता प्राप्त चिड़ियाघरों की सूची उनके वर्गीकरण के अनुसार निम्नलिखित है:–

क्र.सं.	चिड़ियाघर का नाम	स्थान	श्रेणी
	अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह		
1	बायोलॉजिकल पार्क चिड़ियाटापू	पोर्ट ब्लेयर	छोटा चिड़ियाघर
	आंध्र प्रदेश		
2	डीयर पार्क चित्तूर	चित्तूर पूर्व प्रभाग	लघु चिड़ियाघर
3	डीयर पार्क कंडालेरू	कंडालेरू	लघु चिड़ियाघर
4	इंदिरा गांधी जूलॉजिकल पार्क	विशाखापतनम	बड़ा चिड़ियाघर
5	करूणा वाईल्डलाइफ रेस्क्यू एवं रिहैबिलीटेशन सेंटर–रायलसीमा	डिस्ट्रिक अंनतपुर	रेस्क्यू सेंटर
6	श्री वेंकटेश्वर जूलॉजिकल पार्क	तिरूपति	बड़ा चिड़ियाघर
	अरूणाचल प्रदेश		
7	बायोलॉजिकल पार्क ईंटानगर	ईटानगर	छोटा चिड़ियाघर
8	सेंटर फार बीयर रिहैबिलीटेशन एण्ड कंजर्वेशन	पक्के	रेस्क्यू सेंटर
9	मियाओ मिनी जू	मियाओ	लघु चिड़ियाघर
10	मिनी जू, रोइंग	रोइंग	लघु चिड़ियाघर

मान्यता प्राप्त चिड़ियाघरों की सूची (31 मार्च 2023)

क्र.सं.	चिड़ियाघर का नाम	स्थान	श्रेणी
	असम		
11	असम स्टेट जू कम बोटैनिकल गार्डन	गुवाहटी	बड़ा चिड़ियाघर
12	बिजनी डीयर पार्क	बोंगाईगांव	लघु चिड़ियाघर
13	सेंटर फार वाईल्डलाईफ रिहैबिलीटेशन एण्ड कंजर्वेशन	गोलाघाट	रेस्क्यू सेंटर
	बिहार		
14	राजगीर जू सफारी	नालन्दा	लघु चिड़ियाघर
15	संजय गांधी जैविक उद्यान	पटना	बड़ा चिड़ियाघर
	छत्तीसगढ़		
16	कानन पेण्डरी चिड़ियाघर	बिलासपुर	मध्यम चिड़ियाघर
17	मैत्रीबाग चिड़ियाघर	भिलाई	मध्यम चिड़ियाघर
18	नंदनवन जंगल सफारी (नया रायपुर)	नया रायपुर	मध्यम चिड़ियाघर
	दादरा और नगर हवेली		
19	लॉयन सफारी वसोना	वसोना	लघु चिड़ियाघर
	दिल्ली		
20	ए.एन.झा डीयर पार्क	हौज खास	लघु चिड़ियाघर
21	राष्ट्रीय प्राणि उद्यान	नई दिल्ली	बड़ा चिड़ियाघर
	गोवा		
22	बोंडला जू	उसगाओ	छोटा चिड़ियाघर
	गुजरात		
23	अंबार्डी वाईल्डलाईफ इंटरप्रेटेशन जो (अंबार्डी सफारी पार्क)	अमरेली	लघु चिड़ियाघर
24	डा0 श्यामाप्रसाद मुखर्जी जूलॉजिकल गार्डन	सूरत	मध्यम चिड़ियाघर
25	ग्रीन्स जूलॉजिकल रेस्क्यू एण्ड रिहैबिलीटेशन सेंटर	जामनगर	लघु चिड़ियाघर
26	इंद्रोदा नेचर पार्क	गांधी नगर	मध्यम चिड़ियाघर
27	कमला नेहरू जूलॉजिकल गार्डेन	अहमदाबाद	बड़ा चिड़ियाघर
28	राजकोट म्यूनिसिपल जू	राजकोट	मध्यम चिड़ियाघर
29	सक्करबाग जू	जूनागढ़	बड़ा चिड़ियाघर

मान्यता प्राप्त चिड़ियाघरों की सूची (31 मार्च 2023)

क्र.सं.	चिड़ियाघर का नाम	स्थान	श्रेणी
30	सरदार पटेल जूलॉजिकल पार्क	केवड़िया	लघु चिड़ियाघर
31	सयाजी बाग जू	बडोदरा	मध्यम चिड़ियाघर
32	सुंदरवन नेचर डिस्कवरी सेंटर	जोधपुर टेकरा	लघु चिड़ियाघर
	हरियाणा		
33	चौधरी सुरिंदर सिंह ऐलीफैन्ट रेस्क्यू सेंटर	बनसंतूर	रेस्क्यू सेंटर
34	डीयर पार्क हिसार	हिसार	लघु चिड़ियाघर
35	लघु चिड़ियाघर भिवानी	भिवानी	लघु चिड़ियाघर
36	लघु चिड़ियाघर पिपली	पिपली	लघु चिड़ियाघर
37	रोहतक चिड़ियाघर	रोहतक	छोटा चिड़ियाघर
38	गिद्ध संरक्षण प्रजनन केन्द्र	पिंजौर	रेस्क्यू सेंटर
	हिमाचल प्रदेश		
39	धौलाधर नेचर पार्क	गोपालपुर	छोटा चिड़ियाघर
40	हिमालयन नेचर पार्क	कुफरी	छोटा चिड़ियाघर
41	नेहरू फीजेन्ट्री	मनाली	रेस्क्यू सेंटर
42	रेणुका लघु चिड़ियाघर	सिरमौर	लघु चिड़ियाघर
43	रेस्क्यू एण्ड रिहैबीलिटेशन होम	टूटीकंडी	रेस्क्यू सेंटर
44	रिवालसर लघु चिड़ियाघर	मंडी	लघु चिड़ियाघर
45	सराहन फीजेन्ट्री	सराहन	लघु चिड़ियाघर
	जम्मू एवं कश्मीर		
46	मांडा डीयर पार्क	श्रीनगर	छोटा चिड़ियाघर
47	रेस्क्यू एण्ड रिहैबीलिटेशन सेंटर, दाचीराम	श्रीनगर	रेस्क्यू सेंटर
48	रेस्क्यू सेंटर जसरोटा	जसरोटा	रेस्क्यू सेंटर
49	रेस्क्यू सेंटर सचेरा कंजर्वेशन रिजर्व	राजौरी	रेस्क्यू सेंटर
50	ट्रामा/रेस्क्यू सेंटर बिंद्रावन किश्तवार	किश्तवार	रेस्क्यू सेंटर
	झारखण्ड		
51	भगवान बिरसा जैविक उद्यान	रांची	मध्यम चिड़ियाघर

मान्यता प्राप्त चिड़ियाघरों की सूची (31 मार्च 2023)

क्र.सं.	चिड़ियाघर का नाम	स्थान	श्रेणी
52	बिरसा मृग विहार	कालीमाटी	लघु चिड़ियाघर
53	जवाहरलाल नेहरू जैविक उद्यान	बोकारो	मध्यम चिड़ियाघर
54	टाटा इस्पात प्राणी उद्यान	जमशेदपुर	मध्यम चिड़ियाघर
	कर्नाटक		
55	बन्नेरघट्टरा बायोलॉजिकल पार्क	बैंगलुरू	बड़ा चिड़ियाघर
56	चिल्ड्रेन पार्क कम जू (गदग जू)	गदग	छोटा चिड़ियाघर
57	डीयर पार्क एन.एम.डी.सी. लिमिटेड	डोनीमलाई	लघु चिड़ियाघर
58	डा. के.शिवराम कांरत पिलिकुला बायोलॉजिकल पार्क	मैंगलोर	बड़ा चिड़ियाघर
59	इंदिरा प्रियदर्शिनी संग्रहालय, अनागोडू	दावणगेरे तालुक	लघु चिड़ियाघर
60	कितूर रानी चेन्नम्मा निसर्ग धाम मिनी जू	बेलगाम	लघु चिड़ियाघर
61	मिनी जू ए.एम. गुड बलवाना	चित्रदुर्गा	लघु चिड़ियाघर
62	मिनी जू ऐट गेंदेकट्टे	हसन	लघु चिड़ियाघर
63	मिनी जू कम चिल्ड्रेन पार्क	कलबुर्गी	लघु चिड़ियाघर
64	नमदाचिलुमे डीयर पार्क	तुमकुर	लघु चिड़ियाघर
65	पीपुल फॉर एनीमल्स रेस्क्यू सेंटर	बैंगलुरू	रेस्क्यू सेंटर
66	श्री अटल बिहार वाजपेयी जूलाजिकल पार्क	बेल्लारी	लघु चिड़ियाघर
67	श्री चामराजेन्द्र जूलॉजिकल गार्डेन	मैसुर	बड़ा चिड़ियाघर
68	टाईगर एण्ड लॉयन सफारी	शिमोगा	छोटा चिड़ियाघर
	केरल		
69	कैप्रिक्काड मिनी जू एण्ड रेस्क्यू सेंटर	एर्नाकुलम	लघु चिड़ियाघर
70	परस्सीनिकडवु स्नेक पार्क एंड जू	कन्नूर	छोटा चिड़ियाघर
71	स्नेक पार्क, मालमपुझा	मालमपुझा	लघु चिड़ियाघर
72	स्टेट म्यूजियम एण्ड जू	थ्रिसूर	मध्यम चिड़ियाघर
73	तिरूवंनतपुरम जू	तिरूवंनतपुरम	बड़ा चिड़ियाघर
74	थ्रिसूर जूलॉजिकल पार्क, वाईल्डलाईफ कंजर्वेशन एण्ड रिसर्च सेंटर	थ्रिसूर	लघु चिड़ियाघर

मान्यता प्राप्त चिड़ियाघरों की सूची (31 मार्च 2023)

क्र.सं.	चिड़ियाघर का नाम	स्थान	श्रेणी
	लद्दाख		
75	वाईल्डलाईम रेस्क्यू एण्ड रिहैबीलिटेशन सेंटर	लेह	रेस्क्यू सेंटर
	मध्य प्रदेश		
76	गांधी प्राणी उद्यान	ग्वालियर	छोटा चिड़ियाघर
77	कमला नेहरू प्राणी संग्रहालय	इंदौर	मध्यम चिड़ियाघर
78	महाराजा मार्तंड सिंह जूदेव व्हाईट टाईगर सफारी एण्ड जू, मुकुन्दपुर	सतना	लघु चिड़ियाघर
79	वन बिहार राष्ट्रीय उद्यान चिड़ियाघर	भोपाल	छोटा चिड़ियाघर
	महाराष्ट्र		
80	आम्टेस एनीमल आर्क	गढ़चिरौली	रेस्क्यू सेंटर
81	औरंगाबाद म्यूनिसिपल जू	औरंगाबाद	छोटा चिड़ियाघर
82	गोरेवाड़ा इंटरनेशनल जू	नागपुर	लघु चिड़ियाघर
83	लेपर्ड रेस्क्यू सेंटर	मानिकदोह	रेस्क्यू सेंटर
84	महाराजा शहाजी छत्रपति जू	कोल्हापुर	लघु चिड़ियाघर
85	महाराजा बाग जू	नागपुर	छोटा चिड़ियाघर
86	निसर्गकवि बहिनाबाई चौधरी प्राणी संग्रहालय	चिंचवड, पुणे	छोटा चिड़ियाघर
87	पीपुल फॉर एनीमल्स, शेल्टर हाउस	वर्धा	रेस्क्यू सेंटर
88	राजीव गांधी जूलॉजिकल पार्क एण्ड वाईल्डलाईफ रिसर्च सेंटर	पुणे	मध्यम चिड़ियाघर
89	रेस्क्यू सेंटर गोरवाड़ा	नागपुर	रेस्क्यू सेंटर
90	संजय गांधी नेशनल पार्क एण्ड जू	बोरीवली	छोटा चिड़ियाघर
91	वीरमाता जीजाबाई भोंसले उद्यान एण्ड जू	मुंबई	मध्यम चिड़ियाघर
	मणिपुर		
92	मणिपुर जूलॉजिकल गार्डेन	इरोईसेंबा	मध्यम चिड़ियाघर
	मेघालय		
93	लेडी हैदर पार्क एनीमल लैंड (मेघालय जू)	शिलॉंग	लघु चिड़ियाघर
94	नेहरू पार्क जू, दानकग्रे, तुरा	अखोंगिनी	छोटा चिड़ियाघर

मान्यता प्राप्त चिड़ियाघरों की सूची (31 मार्च 2023)

क्र.सं.	चिड़ियाघर का नाम	स्थान	श्रेणी
	मिजोरम		
95	आइजोल जू (मिजोरम जू)	आइजोल	छोटा चिड़ियाघर
96	डीयर पार्क, थेनजोल	थेनजोल	लघु चिड़ियाघर
	नागालैंड		
97	नागालैंड जूलॉजिकल पार्क, रंगापहाड़	रंगापहाड़	मध्यम चिड़ियाघर
	ओडिशा		
98	डीयर पार्क, पापडाहांडी	नबरंगपुर	लघु चिड़ियाघर
99	घड़ियाल रिसर्च एण्ड कंजर्वेशन यूनिट	टिकरपाड़ा	लघु चिड़ियाघर
100	हरिशंकर डीयर पार्क	बालागिर	लघु चिड़ियाघर
101	इंदिरा गांधी पार्क जू	राउरकेला	छोटा चिड़ियाघर
102	कपिलाश जू	ढेंकानाल	छोटा चिड़ियाघर
103	कुनेरिया डीयर पार्क, नयागढ़ फॉरेस्ट डिविजन	नयागढ़	लघु चिड़ियाघर
104	नंदनकानन बायोलॉजिकल पार्क	भुवनेश्वर	बड़ा चिड़ियाघर
105	तप्तापानी डीयर पार्क	परलाखेमुंडी	लघु चिड़ियाघर
106	वाईल्ड एनीमल कंजर्वेशन सेंटर	मोतीझारन, संबलपुर	छोटा चिड़ियाघर
	पंजाब		
107	डीयर पार्क, बीरमोती बाग (पटियाला जू)	पटियाला	छोटा चिड़ियाघर
108	डीयर पार्क, बीर तालाब	बठिंडा	लघु चिड़ियाघर
109	डीयर पार्क नीलॉन	लुधियाना	लघु चिड़ियाघर
110	लुधियाना जू	लुधियाना	छोटा चिड़ियाघर
111	महेन्द्र चौधरी जुलॉजिकल पार्क	छतबीर, चंडीगढ़	बड़ा चिड़ियाघर
	राजस्थान		
112	अभेदा जैविक उद्यान	कोटा	लघु चिड़ियाघर
113	कोटा चिड़ियाघर	कोटा	छोटा चिड़ियाघर
114	माचिया जैविक उद्यान (जोधपुर चिड़ियाघर)	जोधपुर	छोटा चिड़ियाघर
115	नाहरगढ़ जैविक उद्यान (जयपुर चिड़ियाघर)	जयपुर	मध्यम चिड़ियाघर

मान्यता प्राप्त चिड़ियाघरों की सूची (31 मार्च 2023)

क्र.सं.	चिड़ियाघर का नाम	स्थान	श्रेणी
116	सज्जनगढ़ जैविक उद्यान (उदयपुर चिड़ियाघर)	उदयपुर	छोटा चिड़ियाघर
	सिक्किम		
117	हिमालयन जूलॉजिकल पार्क, बुलबुले	गंगटोक	छोटा चिड़ियाघर
	तमिलनाडु		
118	अमृद्धि जू	वेल्लोर	छोटा चिड़ियाघर
119	अरिग्नार अन्ना जूलॉजिकल पार्क	वंडालुर चेन्नई	बड़ा चिड़ियाघर
120	चेन्नई स्नेक पार्क	गिंडी, चेन्नई	छोटा चिड़ियाघर
121	चिल्ड्रेन्स पार्क	गिंडी, चेन्नई	मध्यम चिड़ियाघर
122	कुरूमबापट्टी जूलॉजिकल पार्क	सेलम	छोटा चिड़ियाघर
123	मद्रास क्रोकोडाइल बैंक ट्रस्ट/सेंटर फॉर हरपेटोलॉजी	महाबलीपुरम	मध्यम चिड़ियाघर
	तेलंगाना		
124	डीयर पार्क, केसोराम सीमेंट	बंसतनगर	लघु चिड़ियाघर
125	डीयर पार्क, जवाहर लेक टूरिस्ट कॉम्प्लेक्स	शमीरपेट	लघु चिड़ियाघर
126	काकतीय डीयर पार्क (वनविज्ञान केन्द्र)	वारंगल	छोटा चिड़ियाघर
127	करीमनगर डीयर पार्क	करीमनगर	लघु चिड़ियाघर
128	किन्नरसानी डियर पार्क	किन्नरसारी	लघु चिड़ियाघर
129	नेहरू जूलॉजिकल पार्क	हैदराबाद	बड़ा चिड़ियाघर
130	पिल्लालामारी डीयर पार्क	पिल्लालामारी काम्प्लेक्स महबूब नगर	लघु चिड़ियाघर
	त्रिपुरा		
131	सिपाहीजला जूलॉजिकल पार्क	सिपाहीजला अगरतला	मध्यम चिड़ियाघर
	उत्तर प्रदेश		
132	आगरा बीयर रेस्क्यू फैसिलिटी	आगरा	रेस्क्यू सेंटर
133	कानपुर प्राणी उद्यान	कानपुर	बड़ा चिड़ियाघर
134	लॉयन ब्रीडिंग सेंटर एण्ड मल्टीपल सफारी पार्क, इटावा	इटावा	लघु चिड़ियाघर
135	नवाब वाजिद अली शाह प्राणी उद्यान	लखनऊ	बड़ा चिड़ियाघर
136	नवाबगंज हिरण उद्यान	उन्नाव	लघु चिड़ियाघर

मान्यता प्राप्त चिड़ियाघरों की सूची (31 मार्च 2023)

क्र.सं.	चिड़ियाघर का नाम	स्थान	श्रेणी
137	सारनाथ डियर उद्यान	वाराणसी	लघु चिड़ियाघर
138	शहीद अशफाक उल्ला खान प्राणी उद्यान	गोरखपुर	निर्दिष्ट नहीं है
139	वन प्राणी उद्यान आई.वी.आर.आई.	इज्जतनगर बरेली	लघु चिड़ियाघर
	उत्तराखण्ड		
140	अल्मोड़ा लघु चिड़ियाघर	अल्मोड़ा	लघु चिड़ियाघर
141	देहरादून लघु चिड़ियाघर (मालसी हिरण उद्यान)	देहरादून	लघु चिड़ियाघर
142	पण्डित गोविद बल्लभ पंत उच्च स्थलीय चिड़ियाघर	नैनीताल	छोटा चिड़ियाघर
	पश्चिम बंगाल		
143	अदीना डीयर पार्क	मालदा	लघु चिड़ियाघर
144	अलीपुर जूलॉजिकल गार्डेन	कोलकाता	मध्यम चिड़ियाघर
145	वर्धमान जूलॉजिकल पार्क (रामनाबागान मिनी जू)	बर्दवान	छोटा चिड़ियाघर
146	गरचुमुक (उलुघटा) डीयर पार्क	हावड़ा	लघु चिड़ियाघर
147	हरिनालय ऐट ईको पार्क (नेचर पार्क ऐट ताराटोला रोड)	कोलकाता	लघु चिड़ियाघर
148	जंगल महल जूलॉजिकल पार्क	झारग्राम	मध्यम चिड़ियाघर
149	मार्बल पैलेस जू	कोलकाता	छोटा चिड़ियाघर
150	नार्थ बंगाल वाईल्ड एनीमल्स पार्क	जलपाईगुड़ी	लघु चिड़ियाघर
151	पदमजा नायडू हिमालयन जूलॉजिकल पार्क	दार्जीलिंग	मध्यम चिड़ियाघर
152	रसिकबील मिनी जू	कूचबिहार	लघु चिड़ियाघर
153	साउथ खैरबरी रेस्क्यू सेंटर	मदारीहाट	रेस्क्यू सेंटर
154	सुंदरबन वाईल्ड एनपीमल पार्क, झारकली	डिस्ट्रिक–24 परगना दक्षिण	लघु चिड़ियाघर
155	सुरूलिया मिनी जू, पुरूलिया	पुरूलिया	लघु चिड़ियाघर

कार्यशाला एवं प्रशिक्षण

चिड़ियाघर निदेशकों के लिए राष्ट्रीय सम्मेलन केंद्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण द्वारा आयोजित किया जाता है और 18–19 जनवरी, 2023 तक श्री चामराजेंद्र प्राणी उद्यान, मैसूर, कर्नाटक में आयोजित किया गया।

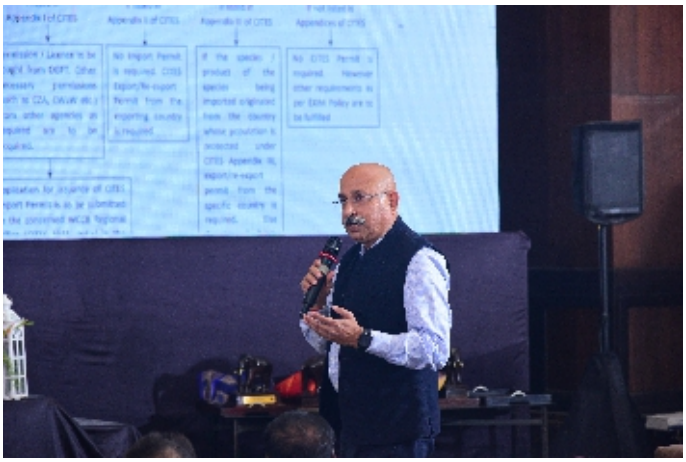

राष्ट्रीय रेफरल सेंटर – वन्यजीव और वन स्वास्थ्य सहयोग के विकास के लिए राष्ट्रीय स्तर की हितधारक कार्यशाला 10 मार्च, 2023 को गंगा सभागार, इंदिरा पर्यावरण भवन, नई दिल्ली में आयोजित की गई थी।

कार्यशाला एवं प्रशिक्षण

वीरमाता जीजाबाई भोसले वानस्पतिक उद्यान एवं चिड़ियाघर, मुंबई में 15 से 17 फरवरी, 2023 तक चिड़ियाघर शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय क्षमता संवर्धन कार्यशाला का आयोजन किया गया।

जूलॉजिकल गार्डन, अलीपुर में 20 से 23 फरवरी, 2023 तक पूर्वी और उत्तर पूर्वी क्षेत्र के चिड़ियाघर पालकों की क्षमता बढ़ाने के लिए तीन दिवसीय क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय प्राणी उद्यान, नई दिल्ली में उत्तरी क्षेत्र के चिड़ियाघर पालकों के लिए 13 से 15 मार्च 2023 तक तीन दिवसीय क्षमता वृद्धि कार्यशाला का आयोजन किया गया

ग्रीन्स जूलॉजिकल रेस्क्यू एंड रिहैबिलीटेशन सेंटर, जामनगर, गुजरात में 21 से 23 मार्च 2023 तक एमएबी लर्निंग सेंटर ऑडिटोरियम हॉल में चिड़ियाघर जीवविज्ञानियों के लिए तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया

सक्करबाग जूलॉजिकल पार्क, गुजरात में दिनांक 13 से 15 सितंबर 2023 तक चिड़ियाघर कीपर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

दिनांक 08 से 20 दिसम्बर 2023 तक असम राज्य चिड़ियाघर सह बॉटेनिकल गार्डन, गुवाहटी असम में में उत्तर पूर्व क्षेत्र के चिड़ियाघर कीपर क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन

कार्यशाला एवं प्रशिक्षण

संजय गांधी जैविक उद्यान, पटना, बिहार में दिनांक 5 से 7 अगस्त, 2023 तक चिड़ियाघर जीवविज्ञानी कार्यशाला का आयोजन किया गया

16 से 18 अक्टूबर, 2023 तक वन विहार राष्ट्रीय उद्यान चिड़ियाघर, भोपाल, मध्य प्रदेश में चिड़ियाघर के पशु चिकित्सकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यशाला का आयोजन

06 नवंबर से 08 नवंबर, 2023 तक नवाब वाजिद अली शाह प्राणी उद्यान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश में चिड़ियाघर शिक्षक के लिए क्षमता निर्माण कार्यशाला का आयोजन

6 से 8 दिसंबर, 2023 तक श्री वेंकटेश्वर प्राणी उद्यान, तिरूपति, आंध्र प्रदेश में दक्षिणी क्षेत्र के चिड़ियाघर कीपर के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन

एम.सी. जूलॉजिकल पार्क, छतबीर, पंजाब, 11–13 दिसंबर, 2023 तक उत्तरी क्षेत्र के चिड़ियाघर रक्षकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन।

कार्यशाला एवं प्रशिक्षण

एनआरसी–डब्ल्यू और वन हेल्थ सहयोग के विकास के लिए दूसरी राष्ट्रीय स्तरीय हितधारक कार्यशाला 22 दिसंबर, 2023 को गंगा ऑडिटोरियम, इंदिरा पर्यावरण भवन, एमओईएफ एंड सीसी, जोर बाग, नई दिल्ली में आयोजित की गई।

खबरों में चिड़ियाघर

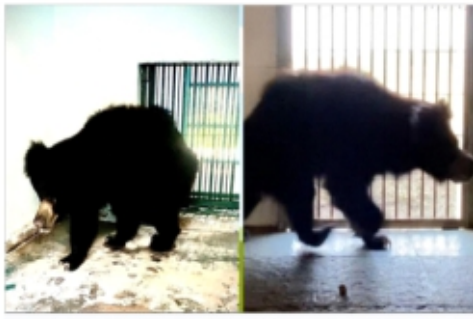

Lucknow News: लखनऊ चिड़ियाघर में आए रॉकी और जूली, भालुओं को देखने के लिए उमड़ी भीड़

Chhattisgarh News: मैत्री बाग चिड़ियाघर में तीन सफेद बाघ शावकों का जन्म, जानें कुल कितनी हुई संख्या

हाइलाइट्स
- चिड़ियाघर में तीन शावकों का जन्म
- भिलाई स्टील प्लांट करता है चिड़ियाघर की देखरेख
- चिड़ियाघर में कुल 9 सफेद शावक हुए

J&K News: जनता के लिए खुल गया जम्मू-कश्मीर का जम्मू चिड़ियाघर, प्रदेश के रोजगार और विकास को मिलेगा बढ़ावा

International Tiger Day 2023: 1975 में पहली बार पटना के चिड़ियाघर में आए थे बाघ, जानिए अब कितने टाइगर

International Tiger Day 2023: 153 एकड़ में फैले पटना जू में पहली बार 1975 में दिल्ली के चिड़ियाघर से बाघ लाया गया था. वहीं वर्तमान में पटना जू में चार वयस्क संगीता, नकुल, बाघी, भवानी और तीन शावक केसरी, विक्रम और रानी है.

By Prabhat Khabar | July 29, 2023 5:32 AM

रविवार को गुलजार हुआ लखनऊ चिड़ियाघर, 18 हजार से अधिक लोगों के पहुंचने से बढ़ी रौनक

(18 thousand people reached Lucknow Zoo)

दिल्ली के चिड़ियाघर में छोड़े गए रॉयल बंगाल टाइगर के शावक, "धात्री" और "धैर्य" का लोग कर सकेंगे दीदार

चिड़ियाघर में बढ़ा शेरों का कुनबा: बड़े बाड़ों में शिफ्ट होंगे रुस्तम-राणा और बॉबी, लोगों ने दिए थे ये सुझाव

ENRTY FREE : लखनऊ चिड़ियाघर में 12 साल तक की बालिकाओं का प्रवेश निशुल्क, देखने को मिलेंगे खूंखार जानवर

कौन-सा है भारत का सबसे बड़ा चिड़ियाघर, जानें

Indore के जू में लाए गए 42 नए जानवर, पहली बार एनाकोंडा को देख सकेंगे लोग

gnttv.com
नई दिल्ली, 16 फरवरी 2023, Updated 7:11 PM IST

अब जरा सा सैर सपाटा हो जाए लिए चलते हैं आपको इंदौर के जू में. जहां नए मेहमानों को देखने के लिए लोगों की आमद बढ़ गई है. बच्चे खास कर इन मेहमानों को देख कर रोमांचित हैं. और ये नए मेहमान हैं. एनाकोंडा और एक खास प्रजाति की गिलहरी वैसे आपको बता दें कि एनिमल एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत एनाकोंडा समेत कुल 42 जानवर जू में लाए गए हैं.

Now let's take you for a little walk to the zoo of Indore. Where the influx of people has increased to see the new guests. The children are especially thrilled to see these guests. And these are the new guests.

भगवान बिरसा जैविक उद्यान, राँची, झारखण्ड

लेख एवं फोटो
भगवान बिरसा जैविक उद्यान, रांची, झारखण्ड

परिचय

भगवान बिरसा जैविक उद्यान, चकला, ओरमांझी, राँची, झारखण्ड में स्थापित किया गया है। यह 1994 में पूर्ण रुप से आगंतुको के लिए खोला गया। रांची शहर से लगभग 20 किमी दूर गेतलसूद बांध के पास 104 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला है। जैविक उद्यान को एनएच33 के द्वारा दो प्रभाग (जन्तु प्रभाग एवं वनस्पती प्रभाग) में विभाजन होता है। जन्तु प्रभाग 81 हेक्टेयर में एवं वनस्पती प्रभाग 23 हेकटेयर में फैला हुआ है। जैविक उद्यान का परिसर प्राकृतिक वनों से भरा हुआ है। जिसमें साल के पेड़ प्रमुख है।

जन्तु प्रभाग

जन्तु प्रभाग प्राकृतिक वनों से युक्त है, जो विर्भिन्न जंगली जानवरों की प्रजातियों के लिए बाड़े बनाने के लिए एक अनुकुल वातावरण प्रदान करता है। पार्क में 91 प्रजातियों (स्तनपायी 31. सरीसृप 19 और पक्षी 41) के जंगली जानवरों को रखा गया है। चिडियाघर में बाड़ों का प्रबंधन प्रत्येक प्रजाति की विशिष्ट आवश्यकताओं एवं व्यवहार का ध्यान में रखते हुए निर्माण किया गया है। जंगली जानवरों के बेहतर स्वास्थय प्रबंधन के लिए जन्तु अस्पताल, खाद्य गोदाम, चारा प्लोट का भी निर्मान किया गया है। जन्तु प्रभाग के मुख्य आकर्षण का केन्द्र सफेद बाघ, सफेद हिरन, सफेद मोर एवं काला तेंदुआ है।

वनस्पती प्रभाग

वनस्पती प्रभाग 23 हेक्टेयर में फैला हुआ है। मछलीघर का निर्माण इसी प्रभाग में किया गया है जो 1000 वर्ग मीटर में फैला हुआ है जो भारत के सबसे बड़े मीठे पानी का एक्वेरियम में से एक है। इसी प्रभाग में भारत के सबसे बड़े तितली पार्क का निर्माण किया गया है जो 20 एकड़ के क्षेत्र में फैला हुआ है। तितली पार्क में लगभग 80 से ज्यादा तितलियों की प्रजातियों को दर्ज किया गया है। झारखण्ड चिड़ियाघर प्राधिकरण का प्रशासनिक कार्यालय भी इस प्रभाग में अवस्थित है। जहाँ पर पार्क से सबंधित सभी महत्वपुर्ण निर्णय लिए जाते है।

पशु देखभाल

जंगली पशुओं कि देखभाल के लिए जन्तु अस्पताल का निर्माण किया गया है। जहाँ पर पशुओं के बेहतर स्वास्थ्य कि जाँच के साथ–साथ विभिन्न प्रकार के दवाईयों को सुविधा उपलब्ध है। जन्तु अस्पताल किसी भी चिड़ियाघर का महत्वपूर्ण भाग होता है। चिड़ियाघर के जानवरों के लिए प्रतिदिन ताजा भोजन तैयार किया जाता है, जिससे संतुलित और पौष्टिक आहार सुनिश्चित होता है। इसके अतिरिक्त, शाकाहारी जानवरों के लिए हरो घास का उत्पादन करने के लिए 5 एकड़ के चारे के भूखंड पर खेती की जाती है। पशुओं के भोजन से संबंधित सारे खाद्य पदार्थ खाद्य गोदाम में रखा जाता है। यहीं पर शाकाहारी एवं मांसाहारी पशुओं के भोजन को अलग–अलग हिस्सों में तैयार किया जाता है। पशुओं के व्यवहार एवं क्षमता के अनुसार के अनुसार एक आहार तालिका बनाया गया है। जिसके अनुसार कर्मचारी पशुओं के भोजन को तैयार करते है। विभिन्न मौसम में पशुओं कि देखभाल के लिए कुलर, पंखा, छावनी, हिटर, कंबल आदी की व्यवस्था की जाती है। प्रतिदिन पशु–बाड़ा को पशुपालक के द्वारा जाच करने के उपरान्त ही पशुओं को बाड़ा क्षेत्र में छोड़ा जाता है एवं विचरण क्षेत्र को जीवाणु और विषाणु से बचाने के लिए समय–समय पर दवाइयों का भी छिड़काव किया जाता है। समय–समय पर पशु चिकित्सक के द्वारा पशुओं को टिका भी लागाया जाता है।

पशुओं के अनुवांशिक संतुलन को बनाए रखने के लिए विभिन्न चिडियाघरों से आदान–प्रदान भी किया जाता है। जैविक उद्यान में पशुओं का सम्पूर्ण ध्यान रखा जाता है। जिसके कारण इनके को प्रजनन के लिए अनुकुल वातावरन मिल जाता है। जिसके परिणाम स्वरुप जैविक उद्यान में प्रत्येक वर्ष बच्चों का जन्म होता है। अभी तक बाघ, तेंदुआ, लकड़बग्घा, भालु, हिप्पो, गौर, हिरन, मगरमच्छ, घड़ियाल, मोर आदि के बच्चों का जन्म हो चुका है।

आगंतुक सुविधाएं

भगवान बिरसा जैविक उद्यान आगंतुकों के लिए कई सुविधाएं प्रदान करता है। चिड़ियाघर के प्रवेश द्वार के बाहर दो पहिया एवं चार पहिया वाहनों के लिए एक निर्दिष्ट पार्किंग क्षेत्र है। प्रवेश द्वार के समीप ही टिकट घर है। जहाँ से प्रवेश टिकट

खरोदकर चिड़ियाघर में प्रवेश कर सकते है। भ्रमण क्षेत्र में आगंतुक पथ बनाया बया है जो सभी पशुओं के बाड़ों के बगल से गुजरता है। आगंतुक पथ के किनारे विभिन्न दिशा–निर्देश के लिए साइन बोर्ड लगाये गए हैं। जिसकी सहायता से दर्शक चिड़ियाघर के सभी पशुओं कि जानकारी को प्राप्त करने के साथ–साथ महत्वपूर्ण दिशा–निर्देशों को पढ़तें हुए उनका पालन कर सकते हैं। विभिन्न जगहों पर महिला एवं पुरुष के लिए अलग–अलग प्रसाधन के साथ–साथ पीने के पानी के लिए प्याउ का भी निर्माण किया है। आगंतुको के घुमने के लिए बैटरी गाड़ी, साइकिल एवं विकलांग के लिए व्हिल चेयर की भी व्यवस्था है। आगंतुको की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए विभिन्न जगहो पर पदाधिकारियों का फोन नम्बर दिया गया है एवं सुरक्षा कर्मी को भी भ्रमण में रखा गया है।

शिक्षा कार्यक्रम

भगवान बिरसा जैविक उद्यान शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रमों के लिए समर्पित है। जो विभिन्न वर्गों को पशुओं और वन्यजीव संरक्षण के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकार के कायक्रम का भी आयोजन करता है। इन कार्यक्रमों में ग्रामीण स्कूली छात्रों के लिए शैक्षिक अनुभव शामिल है, जो उन्हें पार्क की जैव विविधता और प्राकृतिक आवासों के संरक्षण के महत्व के बारे में मूल्यवान जानकारी प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए इंटर्नशिप और अनुसंधान के अवसर प्रदान करता है। जिससे प्रतिभागियों को जानवरों की देखभाल और संरक्षण में व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने की अनुभव मिलता है। इन शैक्षणिक कार्यक्रम के माध्यम से, पार्क का उद्देश्य युवा पीढ़ी के बिच पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी और नेतृत्व की भावना को प्रेरित करना और क्षेत्र की समृद्ध वन्यजीव विरासत के लिए गहरी संवेदना पैदा करना है।

गोद लेने का कार्यक्रम

भगवान बिरसा जैविक उद्यान पशुओं को गोद लेने का अवसर भी प्रदान करता है। जो व्यक्तियों या कॉरिट प्रायोजकों को विशिष्ट जानवरों की देखभाल और कल्याण का समर्थन करने की अनुमति देता है। बाघ, शेर, मोर या घड़ियाल जैसे जानवर को गोद लेकर, प्रायोजक सीधे संरक्षण प्रयासों में योगदान करते हैं। गोद लेने के कार्यक्रम के माध्यम से जुटाई गई धनराशि गोद लिए गए जानवरों के लिए उच्च गुणवत्ता वाला भोजन, चिकित्सा देखभाल और संवर्धन गतिविधियाँ प्रदान करती है। यह पार्क की विविध प्रजातियों की चल रही देखभाल और संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

चिड़ियाघर के बारे में

एशियाई शेर प्रजनन केंद्र और मल्टीपल सफारी पार्क, इटावा : बीते अतीत युग को दोहराने का एक प्रयास

लेख एवं फोटो : शशांक पटेल

शेर प्रजनन केंद्र और मल्टीपल सफारी पार्क, इटावा शहर से लगभग चार किलोमीटर दूर, इटावा–ग्वालियर राजमार्ग पर ऐतिहासिक 'फिशर फॉरेस्ट' में स्थित है। 1884 में, इटावा के तत्कालीन जिला मजिस्ट्रेट, श्री जेएच फिशर स्थानीय जमींदारों को 1146.07 हेक्टेयर के बीहड़ क्षेत्र को स्वेच्छा से सरकार को सौंपने के लिए मनाने में सक्षम रहे थे ताकि क्षेत्र में लगातार हो रहे मिट्टी के कटाव और भूमि के क्षरण से बचाया जा सके। तदनुसार, क्षेत्र की जुताई की गई और बबूल (अकेशिया निलोटिका), शीशम (डाल्बर्जिया सिस्सू), और नीम (अजादिराक्टा इंडिका) के बीजों का छिड़काव कराया गया और क्षेत्र को मवेशियों के चरने के लिए प्रतिबन्धित कर दिया गया।

उपरोक्त प्रताजियों में बबूल की वृद्धि इतनी उत्साहजनक थी कि 1912 में, कानपुर की एलन कूपर कंपनी जो तत्समय चर्मशोधन हेतु बबूल कर छाल का उपयोग करती थी, ने रुपये 2.50 प्रति हेक्टेयर प्रति वर्ष के पट्टे पर 50 वर्ष की अवधि के लिए पट्टे पर पूरी जमीन लेने के लिए आकर्षित हुई। इस कंपनी ने वर्ष 1914 तक फिशर वनों का व्यावसायिक रूप से दोहन किया लेकिन दो साल बाद ही कंपनी ने रुपये की देनदारी के साथ वन विभाग को पट्टा वापस सौंप दिया। इस प्रकार वर्ष 1914 से फिशर वन, वन विभाग के नियंत्रण में आ गया।

सीानीय लोगों के जंगल पर कब्जा करने से रोकने के दृष्टिगत अगले वर्षों में वन विभाग द्वारा दो प्रकार की गतिविधियाँ शुरू की गईं। पहला, मिट्टी के कटाव को रोकने के लिए चेक डैम का निर्माण और दूसरा, उपयुक्त प्रजातियों का वृक्षारोपण और बीज बुआन। कालान्तर में इस क्षेत्र में चौड़ी पत्ती वाले वनों की स्थापना हुई। हालाँकि, उच्च जैविक दबाव के कारण, चौड़ी पत्ती वाली प्रजातियाँ धीरे–धीरे समाप्त हो गईं और अंततः यह क्षेत्र गंभीर रूप से नष्ट और अविनत हो गया। वर्ष 1985 और उसके बाद के कुछ वर्षों में प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा की प्रसारण बुआई की गई। परिणामस्वरूप, प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा का घनत्व बढ़ गया और यह क्षेत्र अन्य प्रजातियों की छिटपुट उपस्थिति के साथ प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा वन में परिवर्तित हो गया।

दुखद और क्रूर इतिहास

दंतकथाओं के अनुसार एशियाई शेर (पेंथेरा लियो पर्सिका) एक समय पूरे उत्तरी, पश्चिमी और मध्य भारतीय जंगलों (हिंदूकुश से बंगाल की खाड़ी और नर्मदा नदी तक) में भ्रमण और राज करता था। ऐतिहासिक अभिलेखों से पता चलता है कि उत्तरी भारत में, मध्यकाल तक प्रवासी शेरों के कब्जे वाला आखिरी क्षेत्र यमुना नदी के जलग्रहण क्षेत्र के जंगल थे, क्योंकि मुगल सम्राटों ने शिवालिक पर्वत के जंगलों (अब सहारनपुर वन प्रभाग) और दिल्ली के आसपास अरावली रेंज के जंगलों में शेर को शिकार किया था। भारत के शाही गजेटियर (संयुक्त प्रांत आगरा और अवध खंड 1–1908) के अनुसार इस क्षेत्र में शेर के प्रवास का आखिरी प्रमाण 1864 में इलाहाबाद अब प्रयागराज जिले के श्योराजपुर में मारे जाने के रूप में मिलता है। तेजी से मानव एवं मवेशी की जनसंख्या वृद्धि के परिणामस्वरूप दक्षिणी काठियावाड़ प्रायद्वीप में गुजरात के गिर के जंगलों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा और शिकार के घटते आधार के साथ संघर्ष के कारण एशियाई शेरों की केवल एक छोटी आबादी ही जंगल में रह गई।

नए युग की शुरुआत

संरक्षण के दृष्टिकोण से, लायन सफारी की स्थापना एशियाई शेरों के पूर्व–स्थान प्रजनन के साथ–साथ पिछले युग की जंगली आबादी को उसके निवास स्थान की पूर्व सीमा में दोहराने के दोहरे उद्देश्य को पूरा कर रही है, हालांकि बाड़ में लेकिन लगभग मुक्त। शेर सफारी के अलावा लगभग 125 हेक्टेयर क्षेत्र में फैले अन्य सफारियों जैसे मृग, हिरण और स्लॉथ भालू सफारी भी स्थापित की गई हैं। ये प्रजातियाँ शेरों की सहयोगी प्रजातियाँ हैं। वे न केवल सफारी के पर्यटक मूल्य को बढ़ाती हैं बल्कि वन्यजीवों के संरक्षण में विभिन्न प्रजातियों के पारस्परिक घनिष्ठ सहयोग का संदेश भी देती हैं।

इस क्षेत्र में लगभग 400 पुष्पधारी वनस्पतियों की प्रजातियाँ, 226 पक्षी प्रजातियाँ, तितलियों की 65 प्रजातियाँ, पतंगों की 50 प्रजातियाँ, सरीसृपों की 20 प्रजातियाँ और स्तनधारियों की 20 प्रजातियाँ हैं, जो प्रकृति प्रेमियों और आगंतुकों के लिए प्रमुख आकर्षण हैं।

प्रमुख आकर्षण

एशियाई शेर प्रजनन केंद्र और शेर सफारी : एशियाई शेरों के पूर्व–स्थान प्रजनन के लिए अंतरराष्ट्रीय मानकों पर आधारित एक प्रजनन केंद्र स्थापित किया गया है और यहाँ जन्में दस शावकों द्वारा सफलतापूर्वक वयस्कता प्राप्त करना सफलता की कहानी को उजागर करने के लिए पर्याप्त है। शेरों के संरक्षण का संदेश प्रसारित करने के लिए एक बाड़ वाले 50हे0 क्षेत्र में तीन पशु गृहों के साथ एक अलग सफारी स्थापित की गई है। इन घरों का उपयोग शेरों को एक–दूसरे के साथ सहज रखने के लिए किया जाता है। पर्यटक सफारी प्रशासन द्वारा उपलब्ध कराए गए सुरक्षित वाहनों में अंदर बैठकर प्राकृतिक परिस्थितियों में शेरों को शान से विचरण करते हुए देख सकते हैं।

आगंतुकों हेतु सुविधाएँ : सफारी प्राचीन इमारतों से मिलती–जुलती संरचनाओं की अद्भुत और दिलचस्प दुनिया प्रस्तुत करती है। जैसे ही पर्यटक इको जोन में प्रवेश करते हैं, संरचनात्मक वास्तुकला उन्हें ऊंचे पत्थरों और लहरदार वन क्षेत्र के बीच एक पुराने परित्यक्त शहर का एहसास कराती है। मुख्य द्वार पर सिंह की दो विशाल मूर्तियाँ और पत्थरों से बना प्राचीन खंडहर पुल हर किसी को आकर्षित करता है। 4डी थिएटर, प्राइड रॉक और हरे–भरे घाटी के परिदृश्य, आगंतुकों के अनुभव को बढ़ाते हैं। स्वच्छ शौचालय और बैठने की पर्याप्त व्यवस्था भी उपलब्ध है।

चिड़ियाघर के बारे में

गांधी प्राणी उद्यान, ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

लेख–प्रभारी, गांधी प्राणी उद्यान

गांधी प्राणी उद्यान मध्यप्रदेश का प्राचीनतम चिड़ियाघर है जिसकी स्थापना वर्ष 1902 में हुई थी, पूर्व में इसको किंग जॉर्ज जूलोजीकल पार्क के नाम से जाना जाता था, वर्ष 1922 से नगर निगम द्वारा संचालन किया जा रहा है।

वन्य वैभव :–

- गांधी प्राणी उद्यान (चिड़ियाघर) में विभिन्न प्रजातियों के लगभग 550 वन्य जीव संरक्षित है। जिसमें प्रजातियों के पक्षी, स्तनपायी की प्रजातियों के तथा सरीसर्प की प्रजातियों के वन्यजीव संरक्षित है, जिसमें अतिविलुप्त प्रजातियों के वन्यप्राणी शामिल है।
- चिडियाघर का संचालन केन्द्रीय चिडियाघर प्राधिकरण की मार्गदर्शिका अर्न्तगत किया जाता है। यह चिडियाघर वर्ष 1994 से केन्द्रीय चिडियाघर प्राधिकरण द्वारा पंजीकृत होकर मध्यम श्रेणी का प्राणी उद्यान है।

नये महेमान व वंश में वृद्धि :–

- लॉयन परी व नर जय के द्वारा लगभग 28 वर्षों के बाद वर्ष 2018 में 03 शावक को जन्म दिया गया। इसके बाद पुनः इनके द्वारा वर्ष 2022 में 03 शावको को जन्म दिया गया।
- वर्ष 2011 से वर्ष 2023 तक टाईगर/व्हाईट टाईगर के परिवार में भी वंश वृद्धि हुई है जिसमें 10 वर्षों में 10 शावकों का जन्म हुआ है।
- हिप्पों के जोड़े द्वारा भी अभी तक दो बच्चों कों जन्म दिया गया है।

शैक्षणिक कार्यक्रम :–

प्रतिवर्ष 2 अक्टूबर से 8 अक्टूबर तक वन्यप्राणी सप्ताह का आयोजन किया जाता है जिसमें शहर के विभिन्न स्कूलो के लगभग 500–600 छात्र–छात्राओ द्वारा साप्ताहिक शैक्षणिक गतिविधियों में भाग लिया जाता है, एवं वन्यप्राणी जागरूकता कार्यक्रम के उद्देश्य से बच्चों को शहर के आप–पास वनक्षेत्र में पक्षी प्रेक्षण (वर्ड वॉचिंग) कराई जाती है। साथ ही शहर के स्कूल एवं कॉलेजों में वन्यप्राणी सरंक्षण विषय पर भी पी.पी.टी. एवं लेक्चर के माध्यम से छात्र–छात्राओं को जागरूक किया जाता है।

वर्मी कम्पोस्ट :– गांधी प्राणी उद्यान (चिड़ियाघर) में प्रतिदिन निकलने वाले वेस्ट जैसे बचे हुये फल, सब्जी, हरी पत्तियां, पेपर इत्यादि को वैज्ञानिक रूप से निष्पादन हेतु परिसर के अन्दर ही वर्मी कम्पोस्ट पिट बनायी गयी है जिसमें प्रतिदिन निकलने वाले कचरे से वर्मी कम्पोस्ट खाद तैयार की जाती है।

बार कोड :– प्राणी उद्यान में आने वाले सैलानीयों के लिये इस वर्ष समस्त पेडों पर एवं जानवरों के पिंजरो पर कम्प्यूटरीकृत बार कोड लगाये गये है जिससे दर्शक मोबाईल से बार कोड स्केन कर संबधित प्रजाती की विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते है।

आय :– गांधी प्राणी उद्यान चिडियाघर द्वारा प्रवेशद्वार से दिनांक 01.04.2022 से 31.01.2024 तक राशि रू. 1,45,51,380 की आय की गई है। एवं 31.12.2023 को गांधी प्राणी उद्यान में घूमने आये सैलानियों की संख्या लगभग 09 हजार थी, ग्वालियर संभाग में इकलौता चिड़ियाघर है जिसमें ग्वालियर के आस–पास आगरा, झांसी, गुना, दतिया इत्यादि शहरों से भी सैलानी घूमने आते हैं।

ऑनलाईन बुकिंग सिस्टम :– गांधी प्राणी उद्यान चिड़ियाघर आने वाले सैलानियों के लिये ऑनलाईन टिकिट करने की सुविधा कराई गई।

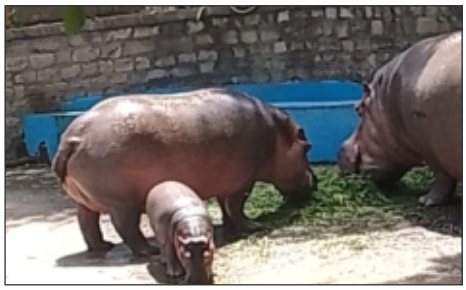

अरावली की खूबसूरत पहाड़ियों के हृदय में स्थित नाहरगढ़ जैविक उद्यान जयपुर शहर से लगभग 15 कि.मी. उत्तर मे है और जयपुर हवाई अड्डे से इसकी दूरी मात्र 25 कि.मी. है। आजादी से पूर्व जयपुर के शासक इस जगह को अपने मनोरंजन और आखेट (शिकार) के लिये उपयोग करते थे जो कि शौर्य और प्रतिष्ठा का द्योतक माना जाता था। यह स्थान जयपुर के शासकों का अत्यंत प्रिय मनोरंजन स्थल था जिसका प्रमाण हमें यहाँ बने हुए अनेक प्राचीन भवनों यथा सुरा की बावड़ी, तीन शिकार ओदियां (ललित विलास, गंगा विलास एवं गोपाल विलास) और रामसागर झील के रूप मे मिलता है। जैसा कि इसके नाम से झलकता है कि यह जगह नाहर यानि बाघों की आश्रयस्थली थी लेकिन समय गुजरने के साथ कई कारणों जैसे कि जनसंख्या वृद्धि, बढ़ता शहरीकरण, चराई के लिए बढ़ते हुए मवेशियों का दबाव, वनों की कटाई आदि कुछ ऐसे कारक रहे जिससे यहाँ वन्यजीवों की संख्या मे निरंतर कमी आती गई। आजादी के बाद जब राजस्थान वन अधिनियम 1953 अस्तित्व मे आया तब यह क्षेत्र भी संरक्षित वन क्षेत्रों मे शामिल कर लिया गया।

यहाँ की समृद्ध वानिस्पतिक और जैव विविधता को दृष्टिगत रखते हुए 22 सितंबर 1980 को राज्य सरकार ने इस क्षेत्र को नाहरगढ़ वन्यजीव अभयारण्य घोषित कर दिया जिसके और निम्न कारण रहे है:–

1. वन्यजीवों का संरक्षण एवं संवर्धन
2. पारिस्थितिकी संतुलन
3. पर्यावरण शिक्षा का प्रसार

इस क्षेत्र मे मुख्य रूप से तेंदुआ (स्थानीय नाम–बघेरा), धारीदार जरख, सियार, जंगली बिल्ली, रस्टी–स्पॉटेड कैट, रेगिस्तानी बिल्ली, छोटा बिज्जू, नीलगाय, सांभर, सेही, नेवला, पटागोह, लंगूर, रीसस मकाक आदि वन्यजीव पाए जाते हैं।

संरक्षण को बढ़ावा देने और संकटग्रस्त वन्यजीव प्रजातियों के संवर्धन के लिये, राज्य सरकार ने 17 दिसम्बर 1988 को राज्य वन्यजीव एडवाइजरी बोर्ड की 35वी मीटिंग मे जयपुर मे एक जैविक उद्यान स्थापित करने का निर्णय लिया। उक्त मीटिंग के फलस्वरूप नाहरगढ़ वन्यजीव अभयारण्य के 720 हेक्टेयर क्षेत्र को नाहरगढ़ जैविक उद्यान के रूप मे विकसित किया गया और यह भारत के पहले जैविक उद्यान के तौर पर जाना गया जो कि जयपुर, राजस्थान मे बना था।

जैविक उद्यान हमे शिक्षा और रिसर्च के साथ साथ दुर्लभ और संकटग्रस्त वन्यजीवों के आवास, व्यवहार और प्रजनन आदतों को समझने मे मदद करता है। नाहरगढ़ जैविक उद्यान का यह चुनिंदा क्षेत्र अरावली पर्वतमाला की वनस्पतियों और वन्यजीवों से पूरी तरह से समृद्ध है। यहाँ पाए जाने वाले तेंदुओं, जरख, सियार आदि के अलावा यहाँ बहुत प्रकार के पक्षी भी पाए जाते हैं जिनकी कुल लगभग 285 प्रजातियां बर्ड–वॉचर्स द्वारा पहचानी जा चुकी हैं। इस उद्यान क्षेत्र मे मुख्य रूप से तीन प्रकार के पारिस्थितकीय तंत्र दृष्टिगत होते हैं जिनमे नमभूमि (वेटलैण्ड) पारिस्थितिकी, मरुभूमि पारिस्थितिकी और सख्त चट्टानी (हार्ड रॉक) पारिस्थितिकी हैं। विविध प्रकार के पर्यावरणीय और पारिस्थितिक तंत्र होने के कारण ही यहाँ वर्ष पर्यन्त अनेक प्रकार के पक्षी पाए जाते हैं।

महाराजा रामसिंह द्वितीय के द्वारा वर्ष 1876 में जयपुर चिडियाघर की स्थापना की जिसको 5.23 हैक्टेयर क्षेत्र में हेरीटेज डिजाइन में वन्यजीवों के बाडे बनाये गये जोकि पॉचवा सबसे पुराना चिडियाघर है जयपुर चिडियाघर के बाडो की डिजाइन हेरीटेज होने व वन्यजीवों के बाडो का क्षेत्रफल केन्द्रीय चिडियाघर प्राधिकरण के अनुकुल नही होने तथा पार्क का जयपुर शहर के मध्य होने के कारण उक्त चिडियाघर के वन्यजीवों को प्राकृतिक परिवेश में पूर्ण पुनस्थापित करने के लिए नाहरगढ जैविक उद्यान को चुना गया जोकि जयपुर शहर के आमेर पर्यटक स्थल से 3 किमी. दूरी पर है नाहरगढ जैविक उद्यान में चयनित स्थल नाहरगढ वन्यजीव अभयारण्य का भाग है जोकि प्राकृतिक वन सम्पदा से आच्छादित है उक्त चयनित क्षेत्र के चारो ओर पहाडियॉ है जोकि बाडो में रहवास करने वाले वन्यजीवों को प्राकृतिक आवास का अनुभव कराते है। जहॉ का

वातावरण शहरी वातावरण से बिल्कुल भिन्न है स्वच्छ शुद्व पर्यावरण का वन्यजीवों द्वारा आनन्द लिया जाता है जिसके कारण वन्यजीवों का स्वास्थ्य बहुत स्वस्थ है उनको पूर्ण विचरण करने के लिए पर्याप्त स्थान उपलब्ध है। वर्तमान में नाहरगढ जैविक उद्यान में 28 प्रजातियों के वन्यजीव रहवास कर रहे है जिनमें सफल प्रजनन हो रहा है। अब इस क्षेत्र को नाहरगढ़ जूलॉजिकल पार्क के नाम से जाना जाता है। पार्क मे आने वाले भ्रमणार्थियों के लिये बहुत ही सुविधाएं विकसित की गई है।

1. बर्ड वॉचर्स, ट्रेकर्स और वन्यजीवों को देखने और पहचानने वाले लोगों के लिए अनेक नेचर ट्रेल्स।
2. झोंपा (उंसस भ्नज) विश्राम के लिए।
3. वाटर कूलर्स
4. साइन बोर्ड, नक्शे, वन्यजीवों की जानकारी के बोर्ड।

नाहरगढ़ जैविक उद्यान में अरावली पर्वतमालाओं की वन सम्पदाओं में मुख्य प्रजाति धौंक (Anogueissus pendula) है, इसके अलावा यहाँ खेजड़ी, बबूल, रौंझ, हिंगोट, कुमठा, शीशम, नीम, करंज, कदम्ब, कैर और गुग्गल आदि भी अच्छी संख्या मे हैं।

पार्क में वन्यजीवों के प्रजनन में भेडिया का प्रजनन–

नाहरगढ जैविक उद्यान में भेडिया का प्रजनन काफी बेहद सराहनीय योगदान पूर्ण रहा है जिसको अन्य चिडियाघर से अन्य प्रजातियों के वन्यजीव आदान–प्रदान के लिए उपयोग लिया गया है, भेडिया जोकि केनिडे परिवार मॉसाहारियों वन्यजीवों का प्राणी है जो कि प्रायः विलुप्त होने की कगार पर है जिसका प्रमुख कारण इनके प्राकृतिक आवास का नष्ट होना है। उक्त वन्यजीव का वर्ष 2009 से लगातार सफलता पूर्ण प्रजनन हुआ है। जिसके लिए बाडे में माह जून से भेडिया के एक–एक जोडे को साथ–साथ छोडा जाता है जिसका संगमन माह सितम्बर–अक्टूबर में शुरू होता है उक्त समय केयर–टेकर के अलावा अन्य किसी भी व्यक्ति को प्रवेश नही दिया जाता है जिसके कारण जोडा एक–दूसरे पर पूर्ण समागन करते है और उसके उपरान्त नर भेडिये को अलग कर देते है जिसके बाद माह दिसम्बर–जनवरी के प्रथम पखवाडे में मादा भेडिया से 2 से 5 तक पिल्लों को जन्म देते है। जिसका पूर्ण देखभाल व खुराक 4 किलो पाडा/भैंसा मॉस दिया जाता है जिसकी पशुचिकित्सक द्वारा पूर्ण निगरानी की जाती है पिल्ले मादा भेडिया के साथ–साथ 6 माह तक रहते है जोकि मादा के साथ चिकन मॉस के छोटे–छोटे टुकडे खाना सीखते है एंव बाडे मे दौडते है। पशुचिकित्सक द्वारा भेडिया के उपचार में हर तीन माह में भेडिया की डिवोरमिंग की जाती है एंव डिस्टम्बर, लेपटोस्पाइरस, रेबीज इत्यादि टीकाकरण किये जाते है तथा भोजन के पूरक पदार्थों में विटामीन, मिनरल, एमीनोएसीड इत्यादि पदार्थ दिये जाते है।

इस प्रकार नाहरगढ जैविक उद्यान में भेडिया का प्रजनन सफलतापूर्ण किया जा रहा है।

वर्ष	नर	मादा	कुल
2009–10	01	01	02
2010–11	03	03	06
2011–12	03	04	07
2012–13	05	09	14
2013–14	05	09	14
2014–15	07	13	20
2015–16	04	11	15
2016–17	08	14	22
2017–18	05	07	12
2018–19	06	09	15
2019–20	05	04	09
2020–21	08	07	15

वर्तमान में जूलॉजिकल पार्क के अतिरिक्त लॉयन सफारी भी संचालित है।

भविष्य की योजनाओं में निम्न गतिवधियाँ प्रस्तावित हैं :–

- टाइगर सफारी
- वॉक इन एवियरी
- नॉकटरनल हाउस
- बटरफ्लाई पार्क
- एलीफैन्ट सफारी
- बर्ड्स ऑफ प्रे ब्रीडिंग सेंटर
- एग्जॉटिक पार्क
- इंटरप्रीटेशन सेंटर
- वाइल्ड एनिमल ब्रीडिंग सेंटर

लेख एवं फोटो :
नाहरगढ़ बायोलॉजिकल पार्क

तितली पार्क, रांची

लेख एवं फोटो
भगवान बिरसा जैविक उद्यान, रांची, झारखण्ड

परिचय

तितली पार्क रांची, भगवान बिरसा जैविक उद्यान, रांची के वनस्पति प्रभाग में स्थापित किया गया है। कुल 20 एकड़ के क्षेत्र में फैला यह तितली पार्क भारत के सबसे बड़े तितली पार्क के साथ–साथ प्रकृति प्रेमियों और तितली प्रेमियों के लिए अनोखा जगह है। तितली पार्क के लगभग 12 एकड़ के हिस्से मे प्राकृतिक जंगल है जिसमें साल के पेड़ प्रमुख है, जबकि शेष क्षेत्र में होस्ट और नेक्टर पौधों की 100 से अधिक प्रजातियों को तितली की प्रजातियों के विचरण को ध्यान में रखते हुए लगाया गया है।

तितली पारिस्थितिकी तंत्र

तितली पार्क रांची में पर्यटक तितली की विभिन्न प्रजातियों को देखकर मंत्रमुग्ध हो जाएंगे। पार्क में तितलियों की लगभग 80 से अधिक प्रजातियों को दर्ज किया गया है। यह स्थान इन नाजुक एवं आकर्षक प्राणियों के लिए एक संपन्न पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में कार्य करता है। प्रत्येक तितली प्रजाति के लिए अनुकुल आवास सुनिश्चित करने के लिए, खुले क्षेत्र एवं कंजर्वेटरी को तितली के विचरन व्यवहार के अनुसार डिजाइन किया गया है और सावधानीपूर्वक चयनित होस्ट और नेक्टर पौधों का रोपन किया गया है।

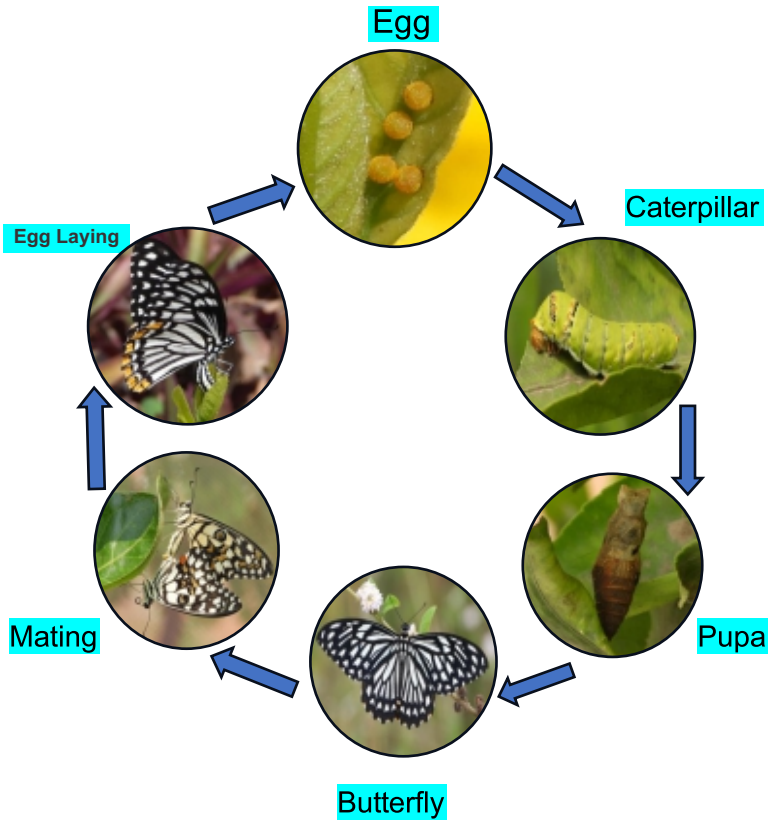

तितली कंजर्वेटरी

तितली पार्क के मध्य में एक तितली कंजर्वेटरी का निर्माण किया गया है। जो 802 वर्ग मीटर में फैला हुआ है। कंजर्वेटरी को एक महीन जालीदार तार के जाल में ढका गया है, जो इन नाजुक प्राणियों की परभक्षियों से सुरक्षा और संरक्षण प्रदान करता है। कंजर्वेटरी के भीतर तीन फव्वारों का निर्माण किया गया है। तितली के जिवन–चक्र से संबंधित एक विस्तृत मॉडल प्रदर्शन के हेतू तैयार किया गया है जिसमें तितली के जटिल जीवन चक्र को दर्शाया गया है। कंजर्वेटरी के अंदर तितली के व्यवहार को ध्यान में रखते हुए वृक्षारोपण भी किया गया हैं जो तितलियों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करते हैं एवं उनके विकास और प्रजनन के लिए एक समृद्ध वातावरण प्रदान करते हैं। कंजर्वेटरी के भीतर, आगंतुक पथ का निर्माण किया गया है। जिसके उपर भ्रमण करते हुए आगंतुक कंजर्वेटरी के अंदर तितलियों को उड़ते हुए देख सकते हैं।

आगंतुकों के लिए आकर्षक सुविधाएँ

आगंतुक पार्क में मनमोहक एवं रंग–बिरंगे फुल पौधों के बिच घुमने का आनन्द उठा सकते है। आगंतुको के विश्राम के लिए पार्क के पाँच विभिन्न जगहों पर गजेबो का निर्माण किया गया है। जहाँ पर आगंतुक बैठकर पार्क की प्राकृतिक सुंदरता को भी निहार सकते हैं। पार्क के मध्य में तितली के व्यवहारिक आवास को ध्यान में रखते हुए एक तालाब का निर्माण किया गया है जहाँ पर तितली के ढांचे के रुप में एक सेल्फी पॉइंट का निर्माण किया गया है। जिसमें आगंतुक अपनी यादों को फोटो के माध्यम से कैद कर सकते हैं। तितली पार्क में तितली कंजर्वेटरी के अंदर रंग–बिरगी तितलियों को बहुत पास से उड.ते हुए मनमोहक दृश्य का आनन्द भी आगंतुक उठा सकेंगे।

समर्पित कर्मचारी और तितली का देखभाल

पार्क की सुंदरता और कार्यक्षमता को बनाए रखने के लिए, 12 से अधिक कर्मचारियों की एक समर्पित समुह पार्क के विभिन्न वर्गों में लगन से काम करती है, जो होस्ट और नेक्टर पौधों की उपलब्धता सुनिश्चित करती है और तितलियों की देखभाल का प्रबंधन करती है। तितली कैटरपिलर को इकट्ठा करने और उनका पालन–पोषण करने के लिए एक अलग अस्थायी प्रजनन कक्ष स्थापित किया गया है, जो उन्हें जीविका के लिए आवश्यक होस्ट पौधे प्रदान करता है। एक बार जब तितलियां प्युपा से निकलती हैं तो उन्हें निर्दिष्ट प्रजनन क्षेत्र में छोड़ दिया जाता है। जहां प्रजनन के बाद तितलियाँ होस्ट पौधों पर अंडे देती हैं। यह प्रक्रिया पार्क के भीतर तितली के जीवन चक्र की निरंतरता सुनिश्चित करती है।

तितलियों की नाजुक सुंदरता का संरक्षण

तितली पार्क रांची, तितलियों की सुंदरता को संरक्षित करने के लिए पुरे समर्पण और जुनून के साथ कार्य कर रहा है। यह एक शिक्षात्मक और मनोरंजक गंतव्य के रूप में कार्य करता है, जो आगंतुकों को तितलियों की खुबसुरती को निहारते हुए तितलियों के जिवन–चक्र एवं संरक्षण कि जानकारी प्रदान करता है। तितली पार्क में संभवतः सालाना लगभग 2–3 लाख आगंतुकों के भ्रमण का अनुमान है।

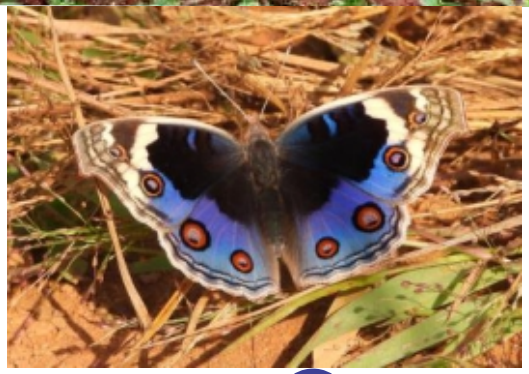

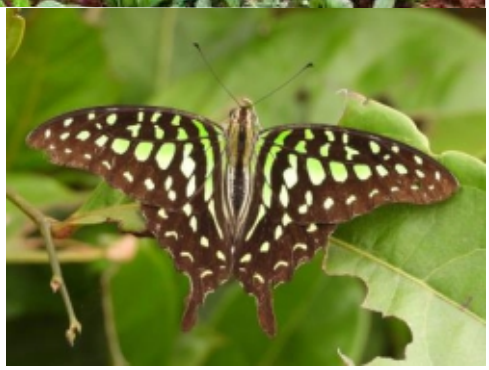

लॉयन ब्रीडिंग सेंटर एण्ड मल्टीपल सफारी पार्क, इटावा की ऐतिहासिक उपलब्धि

चिड़ियाघर का उमदा प्रयास

लेख– श्री कार्तिक द्विवेदी (शिक्षा अधिकारी)
फोटो– डा. विनय कुमार सिंह (उप निदेशक)

उत्तर प्रदेश के जनपद इटावा में यमुना नदी के तट पर स्थापित विश्वस्तरीय लायन ब्रीडिंग सेंटर एवं मल्टीपल सफारी पार्क अब चंबल के बीहड़ों की बदनाम छवि को बदल रहा है। कभी कुख्यात डकैतों का आतंक का पर्याय रहा चंबल का बीहड़ अब इटावा का सफारी पार्क इसकी पहचान बदल रहा है। यह शुद्ध नस्ल के एशियाई शेर की पहली सफारी है, जिसमें इस दुर्लभ प्रजाति के वन्यजीव प्रजनन कर अपना कुनबा बढ़ा रहे है।

पिछले दिनों एशियाई शेरों के सफल एवं चुनौतीपूर्ण प्रजनन में एक नया अध्याय जुड़ गया है, तथा उत्तर प्रदेश के बीहड़ों में स्थापित इटावा सफारी पार्क के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की कड़ी मेहनत का यह नतीजा है कि शेरनी रूपा द्वारा जन्म के बाद जिस शावक को नहीं अपनाया गया था, उस शावक को सफारी प्रबंधन अपने हाथों से पाल पोस कर बड़ा कर रहा है। इस तरह का यह राज्य का पहला एवं देश के कुछ ऐसे ही चुनिंदा मामलों में से एक बन गया है।

शेरनी रूपा के शावक को मां के दूध के बिना, समर्पित कीपर द्वारा पालन–पोषण कर और पूरक आहार के माध्यम से उसके संरक्षण के लिये सफारी के नियो नेटल सेंटर में देख भाल की जा रही है। शावक की आयु अब छह माह से अधिक हो चुकी है, तथा यह शावक पूर्ण रूप से मॉस पर निर्भर हो गया है, एवं स्वस्थ है। सफारी की इस कामयाबी को एक नए इतिहास की नजर से देखा जा रहा है

विशेषज्ञों की माने तो आमतौर पर शेरनी को लगता है कि शावक कमजोर होने के कारण नहीं बचेगा तो वह उसे अपनाती नहीं है और दूध भी नहीं पिलाती है । यहाँ भी एक ऐसा ही मामला सामने आया जिसमे शेरनी ने अपने शावक को छोड़ दिया पर सफारी प्रबन्धन की देख रेख में वह छरू माह बाद भी स्वस्थ है।

सफारी के कुशल प्रबन्धन एवं पशु चिकित्सकों, अन्य अधिकारियों की देख रेख में कर्तव्य निष्ठ कर्मचारियों द्वारा हैंड रियरिंग के जरिए एक शुद्ध नस्ल के एशियाई शेर के शावक को जीवन दान मिला है। इस खबर से देश भर के चिड़ियाघरों, सफारी और वन्यजीवों से जुड़े लोगों में एक खुशी की लहर दौड़ पड़ी है। चंबल के बीहड़ में इस सफारी पार्क के स्थापित होने से शेरों की दहाड़ आसपास के दस किलोमीटर क्षेत्र तक रात में और भोर में सुनाई देती है।

शेरों की ऐतिहासिक प्रादेशिक पृष्ठभूमि (उत्तर भारत में प्रवासी शेरों के वास स्थल, मध्यकाल तक यमुना नदी व चम्बल के जलग्रहण वन क्षेत्र थे) ऐतिहासिक अभिलेख से प्रेरित होकर वर्ष 1990–91 में यूपी के पूर्व मुख्य वन्यजीव प्रतिपालक ने एशियाई शेरों के गौरव को वापस लाने के लिए लॉयन ब्रीडिंग सेंटर को स्थापित करने के लिए सरकार के समक्ष प्रस्ताव रखा था । उ0प्र0 सरकार द्वारा दिये गये निर्देशों के अनुपालन में वन विभाग, उ0प्र0 द्वारा एक विस्तृत प्रस्ताव केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण, नई दिल्ली को प्रस्तुत किया गया तथा उनसे प्राप्त दिशा निर्देशों के क्रम में लॉयन ब्रीडिंग सेंटर एंड मल्टीपल सफारी पार्क, इटावा की स्थापना 350 हे0 क्षेत्र में वर्ष 2016 तक सम्पन्न करा लिया गया। वर्तमान तक, 11 शेर ने इस ब्रीडिंग सेंटर में सफलतापूर्वक उत्पन्न हुए है ।

टिप्पणी

Central Zoo Authority
केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण

केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण
बी–1 विंग, छठा तल,
पंडित दीनदयाल अंत्योदय भवन, सीजीओ परिसर,
लोधी मार्ग, नई दिल्ली – 110 003
दूरभाषः 011–24367846, 24367851, 24367852
फैक्सः 011–24367849 ई–मेलः cza@nic-in
बेबसाइडः www.cza.nic.in